कार्यशाला प्रतिवेदन

(20/09/2018)

निदेशालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 20 सितंबर, 2018 को "राष्ट्र की समरसता व सामंजस्य में राजभाषा हिन्दी का महत्व" विषय पर एक द्विवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यशाला की शुरूआत में डॉ. आर. पी. मीना, हिन्दी अधिकारी ने मुख्य वक्ता सुश्री सरिता सिंह, हिन्दी अध्यापक, एसएनवी इंटरनेशनल स्कूल, आईसीएससी बोर्ड, भुमेल, नडियाद का परिचय देते हुये उनका स्वागत किया तथा कार्यशाला से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ, सत्यजित रॉय, प्रधान वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि को गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया और हिन्दी में चल रहे कार्यों की सराहना की।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में "राष्ट्र की समरसता व सामंजस्य में राजभाषा हिन्दी का महत्व" विषय पर वक्ता सुश्री सरिता सिंह ने वर्तमान में हिन्दी के विस्तार पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया की हिन्दी देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो सभी वर्ग, धर्म व क्षेत्र के लोग के बीच समरसता व सामंजस्य बनाती है।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में "औषधीय एवं सगंधीय पादप के प्रचार–प्रसार में महत्व" विषय पर मुख्य वक्ता डॉ. राम प्रसन्न मीना, वैज्ञानिक ने कहा की हिन्दी भाषा सरल होने के साथ–साथ ग्रामीण परिवेश में समझी जाने वाली भाषा है, जो की औषधीय व सगंधीय फसलों के प्रचार–प्रसार का प्रमुख माध्यम है। इनसे संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी हिन्दी भाषा में ही करवाये जाते रहे हैं।

तृतीय सत्र में प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सभी वर्ग के कार्मिकों ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। अंत में धन्यवाद के साथ कार्यशाला का विधिवत समापन किया गया।

स्रोत: कृषि ज्ञान प्रबंधन इकाई भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद, गुजरात